डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग
SNSRKS College Saharsa

सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तिकला में धातु की मूर्तियाँ

सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तिकला या प्राचीन भारतीय मूर्तिकला में विभिन्न धातु की मूर्तियाँ भी मिलती है. ये मूर्तियाँ विभिन्न स्थलों जैसे की मोहनजोदड़ो, चंहूदड़ो, लोथल, कालीबंगन आदि से प्राप्त हुई है.

इनमें मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर्तकी की कांस्यमूर्ति, भैंसा तथा भेड़ की कांस्य मूर्ति, तांबे की कूबड़दार वृषभ की मूर्ति के आलावा लोथल से प्राप्त कुत्ते तथा कालीबंगन से प्राप्त वृषभ की ताम्र मूर्तियाँ कलात्मक दृष्टि से काफी अच्छी है.

हड़प्पा से प्राप्त प्रसिद्ध नृत्यांगना मूर्ति किस धातु से बनी है

मोहनजोदड़ो से नर्तकी की दो कांस्य प्रतिमा मिली है. इनमें एक अत्यंत सुंदर तथा भावयुक्त है जबकि दूसरी प्रतिमा कलात्मक दृष्टि से उतनी अच्छी नहीं है.

- नर्तकी की इस कांस्य मूर्ति की लम्बाई 14 cm है. यह अत्यंत सुंदर तथा भावयुक्त है.
- इसके शरीर पर वस्त्र नहीं है.
- मूर्ति के पैरों का निचला हिस्सा टूट गया है.
- मूर्ति का बांया हाथ कलाई से लेकर कंधे तक चूड़ियों से भरा है तथा नीचे की ओर लटक रहा है.
- दांये हाथ में वह कंगन तथा केयूर पहने हुए है और हाथ कमर पर टिकाये है.
- उसके बाल घुंघराले है तथा पीछे की ओर जुड़ा बंधा है. गले में छोटा हार तथा कमर में मेखला है.
- नर्तकी के पैर जो थोडा आगे बढे हुए है, संगीत के लय के साथ उठते हुआ जान पड़ता है.
- अपनी मुद्रा की सरलता एवं स्वाभाविकता के कारण यह मूर्ति सबको आश्चर्यचकित करती है.
- इस नृत्यगत स्त्री की स्वाभाविक मुद्रा के अंकन में मूर्तिकार को अपूर्व सफलता मिली है.
- प्रतीत होता है की पूरी मूर्ति का निर्माण सांचे में ढलाई कर एक ही बार में किया गया है. इसे मधुच्छिष्ट विधि (lost wax) कहा जाता है. मधुच्छिष्ट विधि से सैन्धव सभ्यता के शिल्पिकार परिचित थे.

मधुच्छिष्ट विधि (lost wax) क्या होता है:
इस विधि में सर्वप्रथम मोम की मूर्ति बनाई जाती थी. उसके ऊपर चिकनी मिट्टी तथा गोबर का लेप कई बार चढ़ाकर उसे सुखाते थे. सुख जाने के बाद लोहे की तप्त शलाका डालकर मोम मूर्ति को पिघलाकर निकाल दिया जाता था. तत्पश्चात उस सुराख में धातु को पिघलाकर डाला जाता था. कुछ समय पश्चात यह ठंडा होकर मूर्ति का आकार ग्रहण कर लेता था. अंततः मिट्टी गोबर का बाहरी ढांचा फोड़कर अलग कर लिया जाता था तथा धातु की मनोवांछित मूर्ति प्राप्त कर ली जाती थी

हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों से स्त्री-पुरुष के मृद मूर्तियों के अलावे जानवरों की भी मिट्टी की मूर्तियाँ मिली है.